ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 1 DEC 2016

डा0 जगदीश गुप्ता की दृष्टि में नयी कविता

* डॉ0 पुनीता सिंह

डॉ0. जगदीश गुप्ता की दृष्टि मे नयी कविता सचेत कविता है। वह किसी भी बात की संकीर्णता को नहीं स्वीकार करती,बल्कि वह सचेत कविता है। इस प्रकार वह प्रगति वादी और प्रयोग वाद के महत्वपूर्ण तत्वों को अपने में आत्म सात करती हुई आगे बढ़ती है। उनका यह भी विश्वास है कि काव्य को प्राचीन रूढ़ियो निर्जीव मान्यताओं से मुक्ती दिलाने के लिए जिस प्रकार निराला जी ने अभियान शुरू किया। उसी प्रकार नयी कविता ने एक आन्दोलन का रूप देकर मुक्त छन्द को मान्यता दी और काव्य के हर एक स्तर के मध्य एक सन्तुलन बनायें रखने के प्रयास में नई कविता सफल रही हैं। नयी कविता की सार्थकता इस रूप में हैं कि वह जीवन की विविध स्थितियों का चित्रण करती है।

डॉ0.गुप्त ने स्पष्ट करते हुए लिखा है की बाल्मीकि ,कालिदास और पन्त की कविता समझने वाला नई कविता या उसके किसी अत्याधुनिक समसामयिक रूप को समझ नही सकता। इसे तत्वतः स्वीकार करने को मैं तैयार नही हूँ। जिस दिन सचमुच ऐसा हो जायेगा उस दिन कविता ही समाप्त हो जायेगी और नई कविता या कविता के अभिनवीकरण की प्रवृत्ति का प्रश्न ही नही उठेगा। पर मुझे दृढ़ विश्वास है कि कविता से संसार नष्ट होने जा रही है। नई कविता के परिपेक्ष्य में आधुनिकता एवं मानववाद पर उन्होने खास तौर से विचार किया है।गुप्त जी की आधुनिकता को अतीत के साथ जोड़ कर देखते है और अतीत को ध्यान में रख कर ही आधुनिकता की ब्याख्या करते है। वह अतीत की उपलब्धियों को निरर्थक बताकर केवल आधुनिकता को स्वीकार करने के पक्षधर नहीं है। मानववादी जीवन दृष्टि को उन्होने मूल आधार माना है और लिखा है कि मेरे विचार से आधुनिकता अपने सही अर्थ मे उस विवेकपूर्ण दृष्टि कोण से उपजी है जो व्यक्ति को वास्तविक युग–बोध प्रदान करने के साथ–साथ अधिक दायित्व–शील और मानवीय बनाता है।

वस्तुतः नई कविता मे मानवता वादी धारणा विद्यमान है। इस सम्बन्ध में डॉ0 गुप्त ने स्पष्ट कहा है कि नई कविता के रूप मे ,प्रयोगवाद की परिधि से बाहर आने पर,आधुनिक हिन्दी कविता में मानवता वादी तत्व कहीं अधिक घनिष्ट काव्यानुभूति के साथ व्यक्त हुए है।

इस प्रकार डॉ.0 गुप्त की दृष्टि में नई कविता मे मानववादी तत्व विद्यमान है। क्योंकि नई कविता ने प्रगतिवादी और प्रयोगवाद दोनो के कतिपय महत्वपूर्ण तत्वों आदर्शोन्मुखी चेतना भाव

* प्रवक्ता, वी.एम.सी.महाविद्यालय,श्रावस्ती (उ0प्र0)

Scanned with OKEN Scanner

को अपने में आत्मसात कर लिया है। नई कविता में सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति
खासतौर से बल दिया गया है। नई कविता साम्यवाद और समाजवाद से जुड़ी नही है, वह
उससे पृथक इसलिए कि उसमें समाज के प्रति दायित्व का भाव है।

डॉ0 जगदीश गुप्त के मतानुसार नव्य चेतना से जुड़ी नई कविता मानवता वादी है उ
के शब्दो में नई कविता मूलतः मानवतावादी है,क्योकि मानव जीवन की सार्थकता न प्रदान क
वाले तत्वों पर व्यंग–प्रहार करना वह अपना मनुष्य कर्तव्य समझती है। मनुष्य के स
अनुभूतियों के प्रति उसका ग्रहण भाव है तथा युग की जठिलताओं के प्रति दायित्व भाव उ
या तिरस्कार केवल उनके प्रति है जो जीवन को पुरानी या नई रूढ़ियो में बांध देना चाहती
नई कविता के बहुचर्चित एवं महत्वपूर्ण कवि एवं समीक्षक लक्ष्मीकान्त वर्मा ने लघु मानव
डा0.जगदीश गुप्त द्वारा चित्रित नये मानव की कल्पना पर विस्तार से प्रकाश डाला है।
मानव और नये मनुष्य की संस्थापना सन् 1948 ई0 से 1956 ई0 नई कविता के प्रतिमान पु
निकर्ष नई कविता स्वरूप और समस्याऐं इत्यादि ग्रन्थों तथा नई कविता पत्रिका अंक 3,4 में
नये मानव के स्वरूप पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है।

डा0.जगदीश गुप्त ने लघु मानव की धारणा पर चिन्तन करने के पश्चात् लघु को म
संदर्भ मे देखा एवं उसे व्यंग–परक बताया उनकी मान्यता है कि महानता से जुड़कर ही
हो सकती है। डा0.गुप्त ने इस खतरे की ओर भी संकेत किया कि इस मान्यता को स्वी
करने से यह भ्रम भी पैदा होने की सम्भावना है कि हम मानव व्यक्तितव को लघु मानते
नई कविता मानव–व्यक्तित्व के प्रति आस्था तथा उसके असीम सामर्थ्य–शक्ति में विश्
रखती हैं इस प्रकार की लघु मानव की मान्यता पर आपत्ति करते हुए डा0.गुप्त ने नये मनु
की कल्पना कर और सीपित करने का प्रयत्न किया।

वस्तुतः नई कविता नई भाव चेतना एवं नई भगिमा से सम्पृक्त है। इस प्रकार उस
अभिव्यंजना पद्धित पूर्व की कविताओं से पृथक है। शास्त्र और उनके सिद्वान्त आज के सा
के लिए अनुपयुक्त है। आज नये सिद्वान्तों की आवश्यकता हैं। गुप्त जी कहना है कि
सिद्वान्त और अन्य काव्य सिद्वान्त को सार्वभौमिक शाश्वत स्वीकार कर लेने से साहित्य
समुचित ढंग से मूल्यांकन नही हो सकता। इसलिए डा0.गुप्त ने नई कविता के मूल्यांकन
रस सिद्वान्त और नई कविता पृथक आधारों पर आधारित है और दोनों की प्रभाव–प्रकि
बहुत अन्तर है।

अतः नई कविता पर बौद्धिकता की छाप लक्षित होती है। बौद्धिकता के संदर्भ में
गुप्त ने लिखा है।–नई कविता बौद्धिकता की छाया में विकास कर रही है,अतः उसमें
अन्तर्निहित आलोचात्मक दृष्टि मिलती है: यथार्थ चित्रण का आग्रह ,सूक्ष्म व्यंग तथा शैल
वैचित्र एवं नये–नये अर्थो को ध्वनित करने वाला अभिनव प्रतीक–विधान,आदि जिन्हें नई क
की प्रमुख विशेषताएं कहा जा सकता है,सभी के पीछे प्रेरणा का बुद्धिगत रूप स्पष्ट झलकत

Scanned with OKEN Scanner

डॉ0 जगदीश गुप्त का कहना है कि नई कविता की मुद्रा ज्ञेयता की मुद्रा नही है। गद्य शैली की अपनी पृथक पहचान है। सूर, तुलसी, मीरा और छायावादी गीतों के आधार पर इस शैली की सामर्थ्य शक्ति और सम्भावनाओं पर शंका नही की जा सकती है। वास्तव में गीत वही महत्वपूर्ण होते है,जिसमें अनुभूति की सच्चाई बिना किसी कृत्रिम रूप विधान के सहजता से अभिव्यक्त हो जाती है। भारतीय साहित्य में सभी कालों में गीतों के माध्याम से अनुभूति को अभिव्यक्त करने का प्रयास नही किया गया है।

गुप्त जी के अनुसार कुछ दूर तक एक क्षेत्र विशेष कवि–मानस और लोक–मानस भले ही गीत शैली के साथ प्रतीत नही होता। तीनों मानसों की वास्तविक संगति आज के हिन्द काव्य के संदर्भ मे नई कविता के साथ है।

डॉ0.जगदीश गुप्त ने नयी कविता और गीत के अन्तर को सुस्पष्ट करते हुए लिया है कि नई कविता अधुनातन भाव बोध और युगीन वैचारित संर्घष से अनुप्रेरित होती है और गीत अपने मूल रूप में कही नकदी आदिम संस्कारों को जगाने का यत्न करता है।

डॉ0.जगदीश गुप्त ने गीत काव्य के प्रमुख तत्वों के आधार पर नई कविता को परखने का प्रयास किया है। देखा जाय तो व्यक्तितव का प्रतिफलन गीत काव्य में अपेक्षाकृत अधिक सहजता के रूप में होता है और नयी कविता सामाजिक संदर्भो के साथ चलती है इस कारण उसमें शालीनता का भी अभाव है। रोमेन्टिक उन्मुक्तता और प्रवाह मानता गीत की प्रमुख विशेषता है किन्तु नई कविता दृढ़ भावाभिव्यक्ति मिलती है,इतना ही नहीं मर्यादा का भाव भी नई कविता को रौमैन्टिक उन्मुक्तता से दूर रखता है।

डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविता में गीतों का समावेश नही मानते उनका कहना है कि नई कविता के क्षेत्र में गीत,गीत न रहकर गीति–तत्व का प्रतीकार्थ बोधक हो गया हैं। अतः युगानुरूप नई छवि आत्म–सात करने पृथक् गीत अधिक उपयोगी हो सकते है। वस्तुतः नई कविता व्यक्ति को साथ लेकर चलती है। और व्यक्ति के माध्यम से वह लोक मंगल को प्रतिष्ठित करना चाहती है। लोक मंगल को सपित करने हेतु नई कविता ने अपने विधि,विचार एवं डॉ0 जगदीश गुप्त सच्चे अर्थो में नई कविता के पुरोधा थे उनका लेखन साहित्य अनेक विधाओं का मात्र स्पर्ष ही नही किया है,अपितु उनसे पूरी तरह से तादात्म स्थापित करता है नई कविता को समर्पित करने और उसके फल स्वरूप में डॉ0 गुप्त का योगदान श्लाघय है अनेक संघर्षो के बाद नई कविता आन्दोलन शुरू हुआ,और इस आन्दोलन की आधारशिला क श्रेय गुप्त को ही जाता है।

मूलतः नई कविता की दिशा यथार्थ की ओर रही है। अपनी कविताओं के माध्यम स समाज से जुड़े यथार्थ को ही डा.गुप्त ने व्यक्त किया है। यही कारण है कि कवि गुप्त क संवेदना अपने समय की विसंगतियों से सीधे विरोध करती है। वस्तुतः गुप्त जी ने अपनी न

Scanned with OKEN Scanner

कविता के यथार्थ अनुभव से जोड़ते हुए मावन की हित–चिन्ता और मानवीय मूल्
प्रतिष्ठित किया।

डॉ0.गुप्त ने मानव जीवन से जुडे कई महत्वपूर्ण मुददों को अपनी कविता में ह
किया,साथ ही विविध रूपा प्रकृति के सौन्दर्य को भी गुप्त जी के प्रकृति चित्रण में हृदय
तन्मयता की स्पष्ट झलक दीख पड़ती है। जैसे–हिम–विद्धिः कविता संग्रह की सभी क
में हृदय स्पर्शी तन्मयता का भाव देखने को मिलता है। गुप्त जी भाषा के निश्छल और
प्रयोग पर बल देते है। यही कारण है कि उनके काव्य में भाषा भावों का अनुगमन कर
चलती है।

वास्तव मे कवि जगदीश गुप्त आस्था के कवि है। उनकी आस्थ भारतीय चिन
आधारित है। उन्हें समाज के युवा पीढ़ी से बहुत आशाये हैं। मानव और मानवता मे
की अनोखी आस्था है।

डॉ.जगदीश गुप्त की कविताओं में यथार्थ की गूंज तक सुनी जा सक
जैसे–शब्द–दंश,आकोश के पंजे जयन्त शम्बूक आदि संज्ञक कविता संग्रह देखे जा स
जिसमें अराजक,सामाजिक,असमानता,नेताओ कें ढोंग आदि समाज से जुडे सत्यों को
किया है।

वस्तुतः डॉ0.जगदीश गुप्त सच्चे अर्थो में नई कविता के पुरोधा कवि थे। उनके प
मौलिक सौन्दर्य दृष्टि थी जो सौन्दर्य के भोतिक रूप को सौन्दर्य के दृश्य वस्तु को अ
अभोग्य सौन्दर्य की बेदना या अनुभूति को अव्यक्त मानती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–7
2. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–21
3. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–33
4. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–38
5. श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा–नई कविताः के प्रतिमान–पृष्ठ–161
6. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–83
7. डॉ0.जगदीश गुप्त नई कविताः स्वरूप और समस्याऐं–पृष्ठ–158
8. डॉ0.जगदीश गुप्त आदिम–एकान्त(आत्म पक्ष)–पृष्ठ–12
9. डॉ पूजा उपाध्याय–डॉ जगदीश गुप्त के काव्य का समीक्षात्मक अनुशीलन प्रथम संस्करण वर्ष 2004,पृष्ठ–94

Scanned with OKEN Scanner